की शारीरिक असुविधाओं को सहन करता है, वह पुरुष निःसन्देह तपोनिष्ठ पूर्णयोगी है। अष्टांगयोग का चरम-लक्ष्य कृष्णभावनामृत को प्राप्त करना ही है। इसलिए इसका अभ्यास करना कल्याणकारी है और इसके लिए यथाशक्ति पूर्ण प्रयत्न में लगे मनुष्य को पतन का भय नहीं होना चाहिए।

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते।।४१।।

प्राप्य=प्राप्त होकर; **पुण्यकृताम्**=पुण्यात्माओं के; **लोकान्**=लोकों को; **उषित्वा**=निवास कर; **शाश्वतीः**=अनेक; **समाः**=वर्ष; **शुचीनाम्**=सदाचारी; **श्रीमताम्**=धनवानों के; **गेहे**=घर में; **योगभ्रष्टः**=स्वरूप-साक्षात्कार के पथ से भ्रष्ट योगी; **अभिजायते**=जन्म लेता है।

अनुवाद

योगभ्रष्ट पुरुष पुण्यात्माओं के लोकों में अनेक वर्षों तक सुख को भोगकर सदाचारी धनवानों के कुल में जन्म लेता है।।४१।।

तात्पर्य

योगभ्रष्ट योगी दो प्रकार के होते हैं। एक श्रेणी में वे हैं, जो अल्प साधना के उपरान्त ही भ्रष्ट हो जाते हैं तथा दूसरी ओर वे योगी हैं, जो चिरकाल तक योगाभ्यास कर के योगभ्रष्ट हुए हों। प्रथम श्रेणी के योगी पुण्यात्माओं के उच्च लोक प्राप्त करते हैं। वहाँ सुदीर्घ जीवन के बाद फिर इस पृथ्वी पर किसी शुद्धात्मा ब्राह्मण वैष्णव अथवा धनवान् कुल में जन्म लेते हैं।

योगाभ्यास का सच्चा प्रयोजन कृष्णभावनामृतरूपी परम सिद्धि को प्राप्त करना है। परन्तु सांसारिक प्रलोभनों के कारण इस सीमा तक साधन में दृढ़ न रह पाने वाले असफल मनुष्यों को भगवत्कृपा से अपनी विषयतृष्णा को तृप्त करने का अवसर दिया जाता है। इसके बाद, उन्हें पवित्र अथवा धनाढ्य कुल में सम्पन्न-जीवन मिलता है। अतएव इस प्रकार के कुलों में जन्मे मनुष्यों को चाहिए कि इस महान् सुविधा का लाभ उठाते हुए पूर्णरूप से कृष्णभावनाभावित होने के लिए प्राणपण सहित प्रयास करें।

अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम्।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम्।।४२।।

अथवा=अथवा; **योगिनाम्**=विद्वान् योगियों के; **एव**=ही; **कुले**=कुल में; **भवति**=जन्म लेता है; **धीमताम्**=बुद्धिमानों के; **एतत्**=यह; **हि**=निःसन्देह; **दुर्लभतरम्**=अति दुर्लभ है; **लोके**=इस संसार में; **जन्म**=जन्म; **यत्**=जो; **ईदृशम्**=इस प्रकार का।

अनुवाद

अथवा (चिरकाल तक योगाभ्यास करके भ्रष्ट हुआ योगी उन लोकों में न